प्रातःक्लास 25-5-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। जब ओमशान्ति कहते हैं तो बड़े हुलास से कहते हैं। हम आत्मा शान्तस्वरूप हैं। अर्थ कितना सहज है। बाप भी कहेंगे ओमशान्ति। दादा भी कहेंगे ओमशान्ति। वह कहते हैं मैं परमात्मा हूं, यह कहते हैं मैं आत्मा हूं। तुम सभी हो सितारे। सभी सितारों का बाप भी चाहिए ना। गाया जाता है सूर्य-चांद और सितारे। तुम बच्चे हो मोस्ट लक्की सितारे। उन में भी नम्बरवार हैं। जैसे रात को चन्द्रमा निकलता है फिर सितारों में कोई डम कोई बड़े तीखे होते हैं, कोई चन्द्रमा के आगे होते हैं। सितारे हैंना। तुम भी ज्ञान सितारे हो। चमकता है भृकुटि के बीच अजब सितारा। बाप कहते हैं यह सितारे तो बड़े ही वन्डरफुल हैं। एक तो बहुत छोटी बिन्दी हैं। जिसको कोई को पता नहीं है। आत्मा ही शरीर से भिन्न2 पार्ट बजाती है। यह बड़ा ही वन्डर है। तो तुम बच्चों में भी नम्बरवार है। कोई कैसे कोई कैसे। बाप उनको बैठ याद करते है जो सितारे अच्छी रीत चमकते हैं। जो बहुत सर्विस करते हैं। उनको करेन्ट मिलती है। तुम्हारी बैटरी भरती जाती है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने लिए। सर्च-लाईट मिलती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाप कहते हैं जो मेरे अर्थ सभी कुछ त्याग सर्विस में लगे रहते हैं वह बहुत ही प्यारे लगते हैं। दिल परभी चढ़ते हैं। बाप दिल लेने वाला है ना। दिलवाला मंदिर भी है। अभी दिलवाला या दिल लेने वालामंदिर। किसकी दिल लेने वाला। तुम ने देखा है ना। प्रजापिता ब्रहमा बैठा है जरूर उनमें शिव बाबा की प्रवेशता है। और फिर तुम देखते हो ऊपर में स्वर्गकी स्थापनाभी है। नीचे बैठे हैं तपस्या में। यह तो छोटा माडल रूप में बनाया हुआ है। तो जो बहुत अच्छी सर्विस करते हैं बहुत मददगार हैं महारथी घोड़ सवार प्यादे हैं ना। यह मंदिर यादगार का बहुत स्वयुरेट बना हुआ है। तुम कहेंगे यह हमारा ही यादगार है। अभी तुमकोकितनी रोशनीमिली है। और कोई को भी ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है। भक्ति मार्ग में तो मनुष्यों को जोसुनाते हैं सत2 करते जाते हैं। वास्तव में है झूठ। इसको सत समझते हैं। अब बाप तो सत्य है वह ही तुमको सत्य सुनाते हैं। जिसे तुम विश्व के मालिक बनते हो। बाप तो कुछ भी मेहनत नहीं कराते हैं। कुछ भी नहीं। सारे झाड़ का राज़ तुम्हारी बुधि में बैठ गया हैं। तुमको समझाते तो बहुत सहज हैं परन्तु टाईम क्यों लगता है नालेज में वा वर्सा लने में टाईम नहीं लगता। टाईम लगता है पवित्र बनने में। मुख्य हैयाद की यात्रा। यहां तुम आते हो तो यहां एडीशन जास्ती होता है। याद की यात्रा में। घर में जाने से इतना नहीं रहता। यहां भी नम्बरवार हैं। कोई तो यहां बैठे बुधि में यह नशा होगा हम बच्चे वह बाप है। बेहद का बाप और हम बच्चे बैठे हैं। तुम बच्चे जानते हो बाप इस शरीर में आया हुआ है' दिव्य दृष्टि दे रहा है। सर्विस कर रहा है। तो उस एक को हीयाद करनाचाहिए। और कोई तरफ बुधि जाना नहीं चाहिए। हम यहां ब्राहमणी को बिठाऊं तो वह पूरी रिर्पोट दे सकती है। किसकी बुधिबाहर भटकती है, कोई क्या करते हैं, किसको झूटका आता है यह बता सकती हैं। आगे बैठाते थे। अब बिचार आता है कि बिठावें परन्तु फिर उनको अटेन्शन ही इस तरफ चला जावे मुझ न जावे इसलिए छोड़ देता हूं। जो सितारे अच्छी सर्विस एबुंल है उन्हों को ही देखता रहता हैं। बाप का लव है ना। स्थापनामें मदद करते हैं, हू बहू कल्प पहले मिशल। यह राजधानी स्थापन हो रही है। अनेक बार हुई है यह तो ड्रामा का चक्र चलता रहता है। इसमें फिक्र की भी कोई बात नहीं रहती। बाबा के साथ हैं तो संग कारंग लगता जाता है' फिक्र कम होता जाता है। यह तो ड्रामा बना हुआ है। बाप बच्चों के लिए स्वर्ग की राजाई ले आये हैं। सिर्फ कहते हैं मीठे2 बच्चों पतित से पावनबनने लिए बाप को याद करो। अभी जाना है स्वीट होम। जिसके लिए ही भक्तिमार्ग में तु माथा मारते हो परन्तु एक भी जा नहीं सकते। अभी बाप को याद करते रहो, स्वदर्शनचक्र फिराते रहो। अलफ औरबे। बाप को याद करो और 84 के चक्र को याद करो। आत्माको 84 के चक्र का ज्ञान हुआ है। रचयिता औ रचना के आदि मध्य अन्त को कोई भी नहीं जानते हैं। तुम जानते हो तो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। सुबह को उठ कर तुम बुधि में यहखो अब 84 का चक्र हमने पूरा किया। अब वापस जाना है। इसलिए बाप

25-5-68

को याद करना है और चक्र को यादकरना है। तो तुम चक्रवर्ती बनेंगे। यह तो सहज है ना। परन्तु माया तुमको भूला देती है। माया के तूफान है ना। यहदीवों को हैरान कर देती है। माया बड़ी दुस्तर है। इतनी शक्ति है जो बच्चों को भूला देती है। वह खुशी स्थाई नहीं रहती है। तुम बाप को याद करने बैठते हो, बैठे2 बुधि और तरफ चली जाती है। यह सभी हैं गुप्त बातें। कितने भी तुम कोशिश करेंगे परन्तु याद कर न सकेंगे। फिर कोई की बुधि भटक कर स्थिर हो जाती है। कोई फट से स्थिर हो जाते हैं। कोई को कितना भी माथा मारो तो भी बुधि में ठहरता नहीं। इनको माया का युध भी कहा जाता है। कर्म अकर्म बनाने लिए कितनी मेहनत करनी पड़ती है। वहां तो रावण राज्य है नहीं तो कर्म विकर्म भी होते नहीं। माया होती ही नहीं। जो उल्टा काम करावे। रावण और राम का खेल है। आधा कल्प है रामराज्य, आधा कल्प हैरावण राज्य। दिन और रात। संगम युग पर सिर्फ ब्राह्मण ही होते हैं। अभी तुम ब्रहमण समझते हो रात पूरी हो दिन शुरु होना है। वह वर्ण वाले थोड़े ही समझते हैं। सन्यासी आद कुछ नहीं जानते हैं। यहां भी मकानों में आकर रहते हैं उन्हों के शिष्य लोग फट से मकान का प्रबन्ध कर देते हैं। फिर बहुत आवाज़ से गीत आद बैठ गाते हैं। तुमको तो जाना है आवाज़ से परे। तुम तो अपने बाप की याद में ही मस्त रहते हो। आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। आत्मा समझती है बाप को याद करना है। भक्ति मार्ग में शिव बाबा2 तो करते आये हैं। शिव के मंदिर में तो शिव को बाबा जरूर कहते हैं। ज्ञान कुछ भी नहीं। अभी तुमको तो ज्ञान मिला है कि वह शिव बाबा है। उनका यह चित्र है। वे तोलिंग ही समझते हैं। परन्तु समझते कुछ भी नहीं। लिंग के ऊपर जाकर लोटी चढ़ाते हैं। अब बाप तो तो है निराकार। निराकार पर लोटी चढ़ावेंगे वह क्या करेंगे। साकार हो तो स्वीकार करे। निराकार पर दूध आद चढ़ावेंगे वह क्या [illegible] बाप कहते हैं दूध आद जो चढ़ाते हो वह फिर तुम ही पीते हो। भोग भी तुम ही खाते हो। यहाँ लाइट होती है। मैं सम्मुख हूं ना। आगे इनडायरेक्ट करते थे, अभी तो डायरेक्ट है। नीचे आकर पार्ट बजा रहे हैं। सर्च लाइट दे रहे हैं। बच्चे समझते हैं मधुबन बाबा के पास जरूर आनाचाहिए। वहां हमारी बैटरी चार्ज अच्छी तरह होती है। वहां तो घर में गोरख धंधे आद में अशान्ति ही अशान्ति रहती है। इस समय सारे विश्व में अशान्ति है। तुम जानते हो अभी हम शान्ति स्थापन कर रहे हैं योगबल से। बाकी राजाई मिलती है पढ़ाई से। कल्प पहले भी तुम ने यह सुना थाअब भीसुनते हो। जो कुछ एक्टहोती है वह फिर भी होगी। तुम्हारे पासपास्ट हिस्ट्री के फोटोज़ आद भी हैं। जो भी तुम समझते होपास्ट में ऐसे2 हुआ। सिर्फ चित्र देखने से क्या समझेंगे। जरूर उस पर समझाना पड़े। बाप कहते हैं कितने बच्चे आश्चर्यवत भागन्ति हो गये। मुझ माशुक को कितना याद करते थे अभी मैं आया हूं तो कितना छोड़ कर चले जाते हैं। माया कैसा थप्पर लगा देती है। मामा बाबा को ड्रील सिखलाते थे डायरेक्शन देते थे ऐसे करो, नीचे हो बैठे। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नम्बर माला में आवेंगे। वे भी गुम हो गये। तो यह सब समझाना पड़े ना। हिस्ट्रीयां तो बहुत बड़ी है। कृष्ण के चित्र क्या होंगे। जन्म लिया और नर्स ले जाती है। कुछ मुश्किल थोड़े ही किचड़ा आद होता है। आजकल तो पेट चिरा कर बच्चे निकालने का फैशन निकला है। दिन प्रति दिन तमोप्रधान बुधि को पता जाता है। कितने छी छी फैशन हैं। बहुत गन्द है। बाप अपनी बच्चों को भी स्त्री बना कर गन्दा कर देते हैं। एक ऐसा केस चला था, बच्ची को खराब किया थाजब कोर्ट में उन से पूछा गया तो बोला यह तो हमारा ही पैदा किया हुआ फूल है। बाबा अनुभवी भी तो है ना। बाबा को अपनी हिस्ट्री भी सारी याद है। छिनल टोपी नंगे पांव दोड़ता रहता है। मुसलमान लोग बहुत प्यार करते थे बहुत खातरी करते थे मास्टर का बच्चा आया जैसे गुरु का बच्चा आया। बाजरे का डोडा खिलाते थे। यहां भी बाबाने 15दिन प्रोग्राम दिया था छोडा और छाछ खाने का। और कुछ भी बनता न था। बिमार आद सभी के लिए यह बनता था। कुछ किसको हुआ नहीं। और ही बिमार लोग तन्दुरुस्त हो गये। देखते थे आसक्ती टूटी हुई है। यह नहीं होना चाहिए कि यह चाहिए, यह चाहिए। चाहना को चुहरी कहा

25-5-68

जाता है। यहां तो बाप कहते हैं मांगने से मरना भला। बाप खुद ही जानते हैं बच्चों को क्या देना है। जो कुछ देना होगा वह खुद ही देंगे। यह भी ड्रामा बना हुआ है। बाबा ने पूछा था ना बाप को जो बाप भी समझते हैं बच्चा भी समझते हैं वह हाथ उठावे। तो सभी ने उठाया। हाथ तो झट उठा लेते हैं। जैसे बाबा पूछते हैं ल0ना0 कौन बनेंगे झट हाथ उठावेंगे। यह पारलौकिक बच्चा भी जरूर एड करते हैं। यह तो मां-बाप की कितनी सेवा करते हैं। 2। जन्मों का वर्सा दे देते हैं। बाप जब वानप्रस्त में जाते हैं तो फिर बच्चों का फर्ज है बाप की सम्भाल करना। वह जैसे सन्यासी बन जाते हैं। जैसे इनका लौकिक बाप था बानप्रस्त अवस्था हुई तो बोला हम जाकर बनारस में सतसंग करेंगे हमको वहां ले जाओ। (हिस्ट्री सुनाना) तुम हो ब्राहमण। प्रजापिता ब्रहमा कुमार-कुमारियां। प्रजापिता ब्रहमा है ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर। सभी का पहला पिता। मनुष्य सृष्टि का पहला पिता। उनको ज्ञान सागर नहीं कहा जाता। न ब्रहमा विष्णु शंकर ही ज्ञान का सागर है। ज्ञान का सागर है शिव बाबा। अभी वह बेहद का बाप है। तो उन से वर्सा मिलना चाहिए ना। वह निराकार परमपिता परमात्मा कब कैसे आया, जो उनकी जयन्ति मनाते हैं यह कोई को पता नहीं। निराकार आत्माओं को सभी को अपना2 शरीर मिलता है। यह तो गर्भ में नहीं आते हैं। समझाते हैं मैं इन में प्रवेश करता हूं। बहुत जन्मों के अन्त में बानप्रस्त अवस्था में। मनुष्य जब सन्यास करते हैं तो उनकी बानप्रस्थ अवस्था कही जाती है। तो अभी बाप कहते हैं बच्चे तुम ने पूरे 84 जन्म लिये हैं। यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। हिसाब तो जानते हो ना। तो मैं उन में प्रवेश करता हूं। कहां आकर बैठता हूं। इनकी आत्मा जहां बैठी है उनके बाजु में आकर बैठता हूं। जैसे गुरु लोग अपने शिष्य को बाजु में गदी पर बिठाते हैं ना। इनका भी स्थान यहां है। मेरा भी यहां है। कहता हूं हे आत्माएं मामेकं याद करो। तो पाप नाश हो जावेंगे। मनुष्य से देवता बनना है। यह है राजयोग। भक्ति के बाद ज्ञान जिन्दा बाद होता है। यह पुरानी दुनिया ही खत्म होनी है। नई दुनिया के लिए जरूर राजयोग चाहिए। सतयुग आदि में है आदी सनातन देवी देवता धर्म। कलियुग अन्त में क्या था? अनेकानेक धर्म है। बाकी आदी सनातन देवी देवता धर्म है नहीं। बाप कहते हैं मैं आता हूं आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करने। फाउंडेशन लगाने। बाप जानते हैं आधा कल्प तुम ने भक्ति की है गुरु लोग तो अनेकानेक हैं। सद्गुरु एक है। वही सत्य है। बाकी तो सभी हैं झूठ। आदी सनातन देवी देवता धर्म सत्य था ना। बाप है ही सत्य। यह भी बच्चों को समझाया है। एक है रुद्र माला। दूसरी है रुण्ड माला विष्णु की। इसके लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। बाप को याद करो तो माला का दाना बनेंगे। जिस माला को भक्ति मार्ग में तुम सिमरते हो। परन्तु जानते नहीं हो कि यह किसकी माला है। ऊपर में फूल कौन है। किसकी माला फेरते हैं। समझते हैं फिरमेरु क्या है। दाने कौन हैं। समझते कुछ भी नहीं। ऐसे ही राम राम कहते माला फेरते हैं। समझते कुछ भी नहीं। राम राम कहने से ही समझते हैं सभी राम ही राम है। सर्वव्यापी के बात का अंधियारा इससे निकलना है। माला का अर्थ ही नहीं जानते। कोई कह देते 100 मा ला परो। बाबा तो अनुभवी है ना। 12 गुरु किये हैं। आखरीन फिर डिसमिस कर दिया। 12 का अनुभव लिया। ऐसे भी बहुत होते हैं। अपना गुरु होते भी फिर औरों के पास जाते हैं। कि कुछ अनुभव मिल जाये। माला आद परते हैं बिल्कुल ही अंधश्रद्धा। माला पूरी कर फिर फूल को नमस्कार करते हैं। शिव बाबा फूल है ना। माला के दाना तुम अन्यन्य बच्चे बनते हो। तुम्हारा फिर सिमरण चलता है। इनको कुछ भी पता नहीं। वह तो कोई राम राम कहते कोई कृष्ण को याद करते। अर्थ कुछ नहीं। श्रीकृष्ण शरणम् कह देते। अभी वह तो सतयुग का प्रिन्स था। उनको शरण कैसे लेंगे। शरण तो ली जाती है बाप की। तुम ही पूज्य फिर पुजारी बनते हो। 84 जन्म ले पतित बने हो। तो शिव बाबा को कहते हैं हे फूल हमको भी आप समान फूल बनाओ। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुड मार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

*: : ***: : *